प्रश्नोत्तर रत्नमालिका

१८२ प्रश्नोत्तर सहित ६७ श्लोक

(श्रीमद् आद्य शङ्कराचार्य जी कृत)

हिन्दी अनुवादक – श्री सागर पित्रोडा जी

प्रश्नोत्तर को प्रेम से, पढ़े परम पद पाय ।

"जेठू दास" संशय सकल, जड़ से ही जल जाय ।।

वेदान्त प्रेमी मुमुक्षुओं के स्वाध्याय एवं चिंतन हेतु संकलन – जेठू दास वेदान्ती

बारनी खुर्द, जोधपुर राजस्थान

श्रुतिस्मृतिपुराणं आलयम करुणालयं

नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरं।

मैं उन श्री शंकराचार्य रूपी भगवान के चरणों में प्रणाम करता हूँ, जो मानवता के लिए आशीर्वाद हैं, जो श्रुति, स्मृति और पुराण के तीर्थ हैं तथा जो करुणा के धाम हैं।

शंकरम् शंकराचार्यम् केशवम् बदरायणम्

सूत्रभाष्यकृतौ वंदे भगवन्तौ पुनः पुनः।

श्री शंकराचार्य के रूप में भगवान शिव और वेदव्यास (बादरायण) के रूप में भगवान विष्णु को बारंबार नमस्कार है, जो सूत्र और भाष्य के रचयिता हैं।

प्रश्नोत्तर के रूप में यह रचना हमारे जीवन एवं वैदिक धर्म के सनातन मूल्यों को प्रस्तुत करती है, जो देश, काल एवं परिस्थिति से परे है। जीवन के कठिन मार्ग पर चलते हुए ये सभी सिद्धांत हमें सही पथ दिखाते हुए हमारा जीवन उन्नत करते हैं।

ॐ

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका

१८२ प्रश्नोत्तर सहित ६७ श्लोक

प्रथम और अंतिम श्लोक की रचना आद्य शङ्कराचार्य जी के शिष्यों की है।

कः खलु नालंक्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान् ।

अमुया कण्ठस्थितया प्रश्नोत्तररत्नमालिकया ॥१॥

अर्थ–जीवन के दृश्य एवं अदृश्य ध्येय को पाने के लिए आवश्यक ऐसी यह प्रश्नोत्तर रत्न मालिका को पहन के (याद कर के) कौन खुद को अलंकृत नहीं करना चाहेगा ?

भगवन् किमुपादेयं ? – गुरुवचनम् ।

हेयमपि किम् ? – अकार्यम् ।

को गुरुः? –अधिगततत्त्वः शिष्यहितायोयतः सततम् ॥२॥

अर्थ–१–प्रश्न–क्या स्वीकार्य है ? उत्तर– गुरु के वचन (आत्म ज्ञान) ।

२–प्रश्न–क्या त्याज्य है ? उत्तर– जो धर्म के विरुद्ध है ।

३–प्रश्न–गुरु कौन है ? –

उत्तर– जिसने सत्य को पा लिया है और जो सदैव अपने शिष्य के हित की सोचता है ।

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषाम्?–संसारसन्ततिच्छेदः ।

किं मोक्षतरोः बीजम् ? –सम्यग्ज्ञानं क्रियासिद्धम् ॥३॥

अर्थ–४–प्रश्न– विद्वान् व्यक्ति को कौन सी बात त्वरित (शीघ्र) करनी चाहिए ?

उत्तर– जन्म मृत्यु के चक्र का छेदन ।

५–प्रश्न– मोक्ष के वृक्ष का बीज क्या है ?

उत्तर– आचरण में लाया हुआ सही ज्ञान ।

कः पथ्यतरः? – धर्मः ।

कः शुचिः इहः? – यस्य मानसं शुद्धम् ।

कः पण्डितः ? – विवेकी ।

किं विषम् ? – अवधीरणा गुरुषु ॥४॥

अर्थ–६–प्रश्न– सबसे श्रेष्ठ हितकारक क्या है? उत्तर– धर्म ।

७–प्रश्न– सबसे शुद्ध (व्यक्ति) कौन है ? उत्तर– जिसका मन शुद्ध है वह ।

८–प्रश्न– पण्डित कौन है ?

उत्तर–जो विवेकी है। (जो सही–गलत, धर्म–अधर्म, शाश्वत–नश्वर का भेद पहचानता है ।)

९–प्रश्न– विष क्या है ? बड़ों (गुरु) की आज्ञा की अवज्ञा(अवहेलना करना)।

किं संसारे सारम् ? – बहुशोऽपि चिन्त्यमानं इदमेव ।

किं मनुजेषु इष्टतमम् ? स्वपरहिताय उद्यतं जन्म ॥५॥

अर्थ–१०–प्रश्न– संसार का सार क्या है ?

उत्तर–उस तत्व के लिए निरंतर चिंतन करना ।

११–प्रश्न– मनुष्य के लिए इष्ट क्या है ?

उत्तर–स्वयं के और दूसरों के लिए जीवन समर्पित करना ।

मदिरेव मोहजनकः कः? स्नेहः ।

के च दस्यवः? – विषयाः ।

का भववल्ली? तृष्णा ।

को वैरी ? – यस्तु अनुयोगः ॥६॥

अर्थ- १२–प्रश्न– मदिरा की तरह कैफी (भ्रामक) क्या है ? उत्तर– स्नेह ।

१३–प्रश्न– चोर कौन है ? उत्तर– विषय (इन्द्रिय सुख) ।

१४–प्रश्न– जन्म का कारण क्या है ? उत्तर– तृष्णा (इच्छा)।

१५–प्रश्न– शत्रु कौन है ? उत्तर–आलस, प्रमाद ।

कस्मात् भयं इह ? – मरणात् ।

अन्धात् इह को विशिष्यते? – रागी ।

कः शूरः? यः ललना लोचन वाणैः न च व्यधितः ॥७॥

अर्थ–१६–प्रश्न– भय किससे है ? उत्तर– मृत्यु से ।

१७–प्रश्न– अंधे से भी बुरा (व्यक्ति) कौन है ?

उत्तर– रागी (इच्छाओं में फंसा हुआ)

१८–प्रश्न– शूर कौन है ?

उत्तर–सुंदर स्त्री की नजरों के बाणों से व्यथित न होने वाला ।

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किं अमृतं इह युज्यते ? सदुपदेशः।

किं गुरुताया मूलम् ? – यत् एतत् अप्रार्थनं नाम ॥८॥

अर्थ–१९–प्रश्न– वह क्या है, जो अमृत की तरह कानों से पीया जाए ?

उत्तर–सही उपदेश।

२०–प्रश्न– महानता का मूल क्या है ?

उत्तर– किसी से कुछ भी याचना न करना ।

किं गहनम् ? – स्त्रीचरितम् ।

कः चतुरः? – यो न खण्डितः तेन ।

किं दुःखम् ? – असंतोषः ।

किं लाघवम् ? – अधमतो याच्ञा ॥९॥

अर्थ–२१–प्रश्न– गहन क्या है ? उत्तर–स्त्री का चरित्र ।

२२–प्रश्न– चतुर कौन है ? उत्तर–स्त्री का चरित्र जिसे जीत नहीं पाता वह ।

२३–प्रश्न– दुःख क्या है ? उत्तर– असंतोष ।

२४–प्रश्न– लघुता क्या है ? उत्तर– अधम (नीच) व्यक्ति से याचना करना ।

किं जीवितम् ? – अनवद्यम् ।

किं जाड्यम् ? – पाठतोऽपि अनभ्यासः।

को जागर्ति ? – विवेकी ।

का निद्रा? – मूढता जन्तोः ॥१०॥

अर्थ–२५–प्रश्न– जीवित कौन है ? उत्तर– जो निष्कलंक है ।

२६–प्रश्न– मूर्खता क्या है ?

उत्तर– जो सीखा हुआ है, उसका अभ्यास न करना ।

२७–प्रश्न– जागृत कौन है ?

उत्तर– जो विवेकी है। (जो सही–गलत, धर्म–अधर्म, शाश्वत–नश्वर का भेद पहचानता है ।)

२८–प्रश्न– निद्रा क्या है ? उत्तर– मनुष्य की अज्ञानता ।

नलिनी दल गत जलवत् तरलं किम् ? यौवनं धनं च आयुः।

कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः? सज्जना एव ॥११॥

अर्थ–२९–प्रश्न– कमल के पत्ते पे गिरि हुई पानी की बूंद के समान क्षणिक क्या है ?

उत्तर– यौवन, धन और आयु ।

३०–प्रश्न– चन्द्र के किरणों के समान कौन है ? उत्तर– सज्जन व्यक्ति ।

को नरकः? परवशता ।

किं सौख्यम् ? – सर्वसङ्ग विरतिः या ।

किं साध्यम् ? – भूतहितम् ।

प्रियं च किं प्राणिनाम्? असवः ॥१२॥

अर्थ–३१–प्रश्न– नरक क्या है ? उत्तर– दूसरों के वश में रहना ।

३२–प्रश्न– सुख क्या है ? उत्तर– सभी प्रकार के लगाव से मुक्ति ।

३३–प्रश्न– प्राप्त करने योग्य क्या है ? उत्तर– प्राणीमात्र का हित ।

३४–प्रश्न– प्राणीमात्र को प्रिय क्या है ? उत्तर– खुद की जिंदगी ।

को अनर्थफलः? – मानः ।

का सुखदा? – साधुजनमैत्री ।

सर्वव्यसन विनाशे को दक्षः? – सर्वदा त्यागी ॥१३॥

अर्थ–३५–प्रश्न– किसका परिणाम दुर्गति है ? उत्तर– मान का ।

३६–प्रश्न– सुखदायक क्या है ? उत्तर– सज्जनों से मैत्री ।

३७–प्रश्न– सभी प्रकार के दुखों को नाश करने के लिए सक्षम कौन है ?

उत्तर–जो सदैव त्यागी है वह ।

किं मरणम् ? – मूर्खत्वम् ।

किं च अनर्घम्? – यदवसरे दत्तम् ।

आमरणात् किं शल्यम्?

प्रच्छन्नं यत् कृतं पापम् ॥१४॥

अर्थ–३८–प्रश्न– मृत्यु क्या है ? उत्तर– मूर्खता ।

३९–प्रश्न– अमूल्य क्या है ? उत्तर–जो सही समय पर दिया गया है वह ।

४०–प्रश्न– क्या है जो जिंदगीभर कांटे की तरह चुभता है?

उत्तर–छिपकर किया हुआ पाप ।

कुत्र विधेयो यत्नः? विद्याभ्यासे सदौषधे दाने ।

अवधीरणा क्व कार्या? खलु परयोषितु परधनेषु ॥१५॥

अर्थ–४१–प्रश्न– प्रयत्न किसके लिए होना चाहिए ?

उत्तर–विद्याप्राप्ति, औषधि की खोज और दान के लिए ।

४२–प्रश्न– किसकी उपेक्षा (ध्यान न देना, उदासीनता) करनी चाहिए ?

उत्तर–दुर्जनों की, दूसरों की पत्नी और दूसरों के धन की ।

को अहर्निशं अनुचिन्त्या? संसार असारता, न तु प्रमदा ।

का प्रेयसी विधेया?– करुणा दीनेषु सज्ञने मैत्री ॥१६॥

अर्थ–४३–प्रश्न– दिन–रात क्या सोचते रहना चाहिए ?

उत्तर–संसार की क्षणिकता, न की स्त्री की सुंदरता ।

४४–प्रश्न– प्यार के लिए विषय वस्तु क्या होनी चाहिए ?

उत्तर– दीन व्यक्ति के प्रति करुणा, और सज्ञनों से मैत्री।

कण्ठगतैरपि असुभिः कस्य हि आत्मा न शक्यते जेतुम्?

मूर्खस्य शङ्कितस्य च विषादिनो वा कृतघ्नस्य ॥१७॥

अर्थ-४५–प्रश्न– मृत्यु के समय भी किस व्यक्ति को सही रास्ते पे नहीं लाया जा सकता ?

उत्तर– मूर्ख, शंकाशील, निरानंद (उदास) और कृतघ्नी व्यक्ति को ।

कः साधुः? – सद्वृत्तः ।

कं अधमं आचक्षते? – तु असद्वृत्तं ।

केन जितं जगदेतत्? सत्य तितिक्षावता पुंसा ॥१८॥

अर्थ–४६–प्रश्न– सज्ञन कौन है ? उत्तर– जिसकी वृत्ति शुद्ध है ।

४७–प्रश्न– अधम (नीच) किसे कहा जाए ? उत्तर– जिसकी वृत्ति अशुद्ध है ।

४८–प्रश्न– विश्व को कौन जीत सकता है ?

उत्तर– जिसके पास सत्य और सहनशीलता (धैर्य) है ।

कस्मै नमांसि देवाः कुर्वन्ति? – दयाप्रधानाय ।

कस्मात् उद्वेगः स्यात्?संसार अरण्यतः सुधियः ॥१९॥

अर्थ–४९–प्रश्न– देवता किसको नमन करते हैं ?उत्तर–जिसका प्रमुख गुण दया है ।

५०–प्रश्न– उद्वेग (चित की आकुलता,चिंता) किससे निर्माण होता है ?

उत्तर–संसाररूपी जंगल उद्वेग निर्माण करता है ।

कस्य वशे प्राणिगणः? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य ।

क्व स्थातव्यम् ?– न्याय्ये पथि दृष्ट अदृष्ट लाभाढ्ये ॥२०॥

अर्थ–५१–प्रश्न–जीवमात्र को कौन वश कर सकता है ?

उत्तर– जिसकी वाणी सत्य और प्रिय है तथा जो विनम्र है ।

५२–प्रश्न– व्यक्ति को कहाँ स्थिर होना चाहिए ?

उत्तर– इस विश्व में और उसके परे जो लाभदायी है, ऐसे सच्चे पथ पर ।

को अन्धः? यो अकार्यरतः ।

को बधिरः? – यो हितानि न श्रृणोति ।

को मूकः?–यो काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति ॥२१॥

अर्थ–५३–प्रश्न– अंधा कौन है ? उत्तर– जो बुरे कर्मों में लिप्त है ।

५४–प्रश्न– बहरा कौन है ? उत्तर– जो अपने हित की बातें नहीं सुनता ।

५५–प्रश्न– मूक(गूंगा) कौन है ?

उत्तर– सही समय पर जो सही बात नहीं बोलता ।

किं दानम् ? – अनाकाङ्क्षम् ।

किं मित्रम् ? – यो निवारयति पापात् ।

को अलंकारः? – शीलम् ।

किं वाचां मण्डनम् ? – सत्यम् ॥२२॥

अर्थ–५६–प्रश्न– दान क्या है ? उत्तर–जो बिना किसी अपेक्षा (आशा) से किया है।

५७–प्रश्न– मित्र कौन है ? उत्तर– जो पाप से बचाता है ।

५८–प्रश्न– अलंकार (आभूषण) क्या है ? उत्तर– अच्छा चरित्र ।

५९–प्रश्न– वाणी को कौन सजाता है ? उत्तर–सत्य ।

विद्युद्विलसितचपलं किम्? दुर्जनसंगतिः युवतयश्च ।

कुलशीलनिष्प्रकंपाः के कलिकाले अपि? सज्जना एव ॥२३॥

अर्थ–६०–प्रश्न– बिजली के सामान क्षणिक क्या है ?

उत्तर–दुर्जन का संग और युवती ।

६१–प्रश्न– कलियुग में भी कौन अपने अच्छे चरित्र से विचलित नहीं होता?

उत्तर– सिर्फ सज्जन व्यक्ति ।

चिन्तामणिरिव दुर्लभं इह किम् ?– कथयामि तत् । चतुर्भद्रम् ।

किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण? ॥२४॥

अर्थ–६२–प्रश्न– चिंतामणि के सामान दुर्लभ क्या है ?

उत्तर– चार बातें, जो मैं कह रहा हूँ ।

६३–प्रश्न– प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा मार्गदर्शित वह बातें क्या है?

दानं प्रियवाक् सहितं, ज्ञानं अगर्व, क्षमान्वितं शौर्यम् ।

वित्तं त्यागसमेतं दुर्लभमेतत् चतुर्भद्रम् ॥२५॥

उत्तर– १–मीठी वाणी के साथ किया हुआ दान,

२–गर्व रहित ज्ञान,

३–क्षमा सहित शौर्य

४–और संपत्ति की ओर त्याग (उदारता) की दृष्टि –यह चार बातें दुर्लभ है ।

किं शोच्यम् ? – कार्पण्यम् ।

सति विभवे किं प्रशस्तम् ? – औदार्यम् ।

कः पूज्यः विद्वद्भिः?–स्वभावतः सर्वदा विनीतो यः ॥२६॥

अर्थ–६४–प्रश्न– शोक करने लायक क्या है ?

उत्तर– कार्पण्य (जिसने संपत्ति का ना ही उपभोग किया, ना ही दान) ।

६५–प्रश्न– समृद्ध होने पर कौन पूज्य है ?

उत्तर– जिसके पास औदार्य (उदारता) है।

६६–प्रश्न– ज्ञानियों द्वारा कौन पूज्य है ?

उत्तर– जो स्वाभाव से सदैव विनम्र है ।

कः कुलकमलदिनेशः? सति गुणविभवेऽपि यो नमः ।

कस्य वशे जगदेतत्? प्रियहित वचनस्य धर्मनिरतस्य ॥२७॥

अर्थ–६७–प्रश्न– कमल रूपी कुल (कुटुंब) को खिलाने वाला सूर्य कौन है ?

उत्तर– सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद जो विनम्र है ।

६८–प्रश्न– विश्व किसके वश में है ?

उत्तर– जिसकी वाणी मधुर, हितकारक है और जो धर्मपरायण है ।

विद्वन्मनोहरा का? सत्कविता बोधवनिता च ।

कं न स्पृशति विपत्तिः? प्रवृद्धवचनानुवर्तिनं दान्तं ॥२८॥

अर्थ–६९–प्रश्न– क्या विद्वानों को मोहित करता है ?

उत्तर– उन्नत करती हुई कविता और ज्ञान रुपी स्त्री ।

७०–प्रश्न– विपत्ति किसे स्पर्श नहीं कर सकती ?

उत्तर– जो बड़ों की आज्ञा को अनुवर्तन (पालन) है और संयमी है ।

कस्मै स्पृहयति कमला? तु अनलसचित्ताय नीतिवृत्ताय ।

त्यजति च कं सहसा ? द्विज गुरु सुर निन्दाकरं च सालस्यम् ॥२९॥

अर्थ–७१–प्रश्न– देवी लक्ष्मी को कौन पसंद है ?

उत्तर– जिसका मन आलसी नहीं है तथा जिसका आचरण और चरित्र शुद्ध है ।

७२–प्रश्न– और वह तत्क्षण किसका त्याग करती है ?

उत्तर–जो ब्राह्मण, गुरुजन (बुजुर्गों) एवं देवों की निंदा करता है,और जो आलसी है ।

कुत्र विधेयो वासः? सज्जननिकटे अथवा काश्याम् ।

कः परिहार्यो देशः? – पिशुनयुतो लुब्धभूपश्च ॥३०॥

अर्थ–७३–प्रश्न–व्यक्ति को कहाँ रहना चाहिए ?

उत्तर–सज्जनों के समीप या काशी में

७४–प्रश्न– किस जगह को छोड़ना चाहिए ?

उत्तर– जहाँ के लोग नीच है एवं राजा लालची और कंजूस है ।

(पिशुन–चुगली करके दो पक्षों में लड़ाई करानेवाला व्यक्ति)

केन अशोच्यः पुरुषः?–प्रणतकलत्रेण धीरविभवेन ।

इह भुवने को शोच्यः? सत्यपिविभवे न यो दाता ॥३१॥

अर्थ–७५–प्रश्न– क्या व्यक्ति को शोकमुक्त करता है ?

उत्तर– आज्ञाकारी पत्नी और स्थायी समृद्धि ।

७६–प्रश्न– विश्व में क्या शोक करने जैसा है ?

उत्तर– समृद्ध होते हुए भी जो दान नहीं करता है ।

किं लघुतायाः मूलम् ? – प्राकृतपुरुषेषु याच्ञा ।

रामादपि कः शूरः?– स्मरशरनिहतो न यः चलति ॥३२॥

अर्थ–७७–प्रश्न–मान हानि (उपहास) का कारण क्या है ?

उत्तर– नीच व्यक्ति से मांगना ।

७८–प्रश्न– राम से भी बहादुर कौन है ?

उत्तर– कामदेव के बाणों से जिसका मन चालित नहीं होता है ।

किं अहर्निशं अनुचिन्त्यम्? भगवच्चरणम् न संसारः ।

चक्षुष्मन्तोऽपि अन्धाः के स्युः?–ये नास्तिका मनुजाः ॥३३॥

अर्थ–७९–प्रश्न– दिन रात किसका चिंतन करना चाहिए ?

उत्तर– प्रभु के चरणों का, नहीं कि सांसारिक जीवन का ।

८०–प्रश्न– आँखे होने के बावजूद अँधा कौन है ?

उत्तर– जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता है और जो वेदों की निंदा करता है ।

कः पङ्गु इह प्रथितः? व्रजति च यो वार्द्धके तीर्थम् ।

किं तीर्थमपि च मुख्यम् ? चित्तमलं यन्निवर्तयति ॥३४॥

अर्थ–८१–प्रश्न– अपंग कौन है ? उत्तर– जो बूढा होने के बाद तीर्थयात्रा करता है ।

८२–प्रश्न– महत्वपूर्ण तीर्थ कौन सा है ?

उत्तर– जो मन की अशुद्धि (बुरी वासनाओं) को दूर करे ।

किं स्मर्तव्यं पुरुषैः? हरिनाम सदा, न यावनी भाषा ।

को हि न वाच्यः सुधिया ? परदोषश्च अनृतं तद्वत् ॥३५॥

अर्थ-८३–प्रश्न– क्या सदैव याद रखना चाहिए ?

उत्तर– हरि का नाम, नहीं कि हीन व्यक्तियों की भाषा ।

८४–प्रश्न– सज्जनों के लिए अनिर्वचनीय क्या है ?

उत्तर– दूसरों के दोष एवं असत्य ।

किं सम्पाद्यं मनुजैः? विद्या वित्तं बलं यशः पुण्यम् ।

कः सर्वगुणविनाशी? – लोभः ।

शत्रुश्च कः ? – कामः ॥३६॥

अर्थ–८५–प्रश्न – व्यक्ति को किसका उपार्जन करना चाहिए ?

उत्तर– विद्या, वित्त, बल, यश और पुण्य ।

८६–प्रश्न– सभी सद्गुणों को कौन नाश करता है ? उत्तर– लोभ ।

८७–प्रश्न– शत्रु कौन है ? उत्तर– काम (वासना) ।

का च सभा परिहार्या? – हीना या वृद्धसचिवेन ।

इह कुत्र अवहितः स्यात् मनुजः? किल राजसेवायाम् ॥३७॥

अर्थ–८८–प्रश्न– कौन सी सभा का त्याग करना चाहिए ?

उत्तर– जिसमें कोई अनुभवी सचिव नहीं है ।

८९–प्रश्न– व्यक्ति को किस में सतर्क रहना चाहिए ?

उत्तर– राजा की सेवा करने में ।

प्राणादपि को रम्यः? – कुलधर्मः साधुसंगश्च ।

का संरक्ष्या ? – कीर्तिः पतिव्रता नैज बुद्धिश्च ॥३८॥

अर्थ–९०–प्रश्न– प्राण से भी प्यारा क्या है ?

उत्तर– परंपरागत धर्म का पालन एवं सज्जनों की संगति ।

९१–प्रश्न– किसका संरक्षण(रक्षा करना) करना चाहिए ?

उत्तर– कीर्ति, पतिव्रता स्त्री और अपनी विवेकपूर्ण बुद्धि का ।

का कल्पलता लोके ? सच्छिष्याय अर्पिता विद्या ।

को अक्षयवटवृक्षः स्यात्? विधिवत् सत्पात्रदत्त दानं यत् ॥३९॥

अर्थ–९२–प्रश्न– इच्छापूर्ती करनेवाली लता कौन सी है ?

उत्तर– सुपात्र शिष्य को दी हुई विद्या ।

९३–प्रश्न– क्षय न होने वाला वृक्ष कौन सा है ?

उत्तर– सुपात्र व्यक्ति को नियमानुसार दिया हुआ दान

किं शस्त्रं सर्वेषाम् ? – युक्तिः ।

माता च का? – धेनुः ।

किं नु बलम् ? – यद्धैर्यम् ।

को मृत्युः ? – यत् अवदानरहितत्वम् ॥४०॥

अर्थ–९४–प्रश्न– सभी के लिए शस्त्र क्या है ? उत्तर– युक्ति ।

९५–प्रश्न– माता कौन है ? उत्तर– गाय ।

९६–प्रश्न– बल क्या है ? उत्तर– साहस ।

९७–प्रश्न– मृत्यु क्या है ? उत्तर– असावधानी (लापरवाही) ।

कुत्र विषम् ? – दुष्टजने ।

किमिह आशौचं भवेत् ? – ऋणं नृणाम् ।

किं अभयं इह ? – वैराग्यम् ।

भयमपि किम् ? – वित्तमेव सर्वेषाम् ॥४१॥

अर्थ–९८–प्रश्न– विष कहाँ है ? उत्तर– दुर्जनों के पास ।

९९–प्रश्न– कलंक (अपावित्र्य) क्या है ? उत्तर– किसी का ऋणी रहना ।

१००–प्रश्न– अभय किससे प्राप्त होता है ?

उत्तर– वैराग्य (दुन्यावी चीजों के अलगाव) से ।

१०१–प्रश्न– भय क्या है ? उत्तर– संपत्ति ।

का दुर्लभा नराणाम् ? – हरिभक्तिः ।

पातकं च किम् ? – हिंसा ।

को हि भगवत्प्रियः स्यात्? योऽन्यं न उद्वेजयेत् अनुद्विग्नः ॥४२॥

अर्थ–१०२–प्रश्न– क्या पाना मनुष्य के लिए दुर्लभ है ? उत्तर– हरि भक्ति ।

१०३–प्रश्न– पातक (पाप) क्या है ?

उत्तर– हिंसा (किसी भी सजीव को शारीरिक या मानसिक पीड़ा देना) ।

१०४–प्रश्न– कौन भगवान को प्रिय है ?

उत्तर– जो दूसरों को उद्विग्न नहीं करता एवं खुद भी उद्विग्न नहीं होता ।

पारगात् सिद्धिः? – तपसः ।

बुद्धिः क्व नु? – भूसुरे ।

कुतो बुद्धिः? – वृद्धोपसेवया ।

के वृद्धाः? – ये धर्मतत्त्वज्ञाः ॥४३॥

अर्थ–१०५–प्रश्न– सिद्धि किससे मिलती है ? उत्तर– तप से ।

१०६–प्रश्न– बुद्धि कहाँ है ? उत्तर– ब्राह्मण में ।

१०७–प्रश्न– बुद्धि कैसे मिलती है ? उत्तर– वृद्धों की सेवा से ।

१०८–प्रश्न– वृद्ध कौन है ? उत्तर– जो धर्म और सत्य जानते हैं

संभावितस्य मरणात् अधिकं किम् ? दुर्यशो भवति।

लोके सुखी भवेत् कः? – धनवान् ।

धनमपि च किम् ? – यतश्चेष्टम् ॥४४॥

अर्थ–१०९–प्रश्न– प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए मृत्यु से भी बुरा क्या है?

उत्तर– अपयश (बदनामी) ।

११०–प्रश्न– विश्व में सुखी कौन है ? उत्तर– जो धनवान है ।

१११–प्रश्न– धन क्या है ? उत्तर– जिससे इच्छापूर्ती होती है ।

सर्वसुखानां बीजं किम् ? – पुण्यम् ।

दुःखमपि कुतः ? – पापात् ।

कस्य ऐश्वर्य ? यः किल शंकरं आराधयेत् भक्त्या ॥४५॥

अर्थ–११२–प्रश्न– सभी सुखों का बीज क्या है ? उत्तर– पुण्य ।

११३–प्रश्न– और दुखों का ? उत्तर– पाप ।

११४–प्रश्न– ऐश्वर्य(वैभव,धन,संपति) किसका हो सकता है?

उत्तर– जो भक्तहृदय से भगवान शंकर की आराधना करता है ।

को वर्धते ? – विनीतः ।

को वा हीयते? – यो दृप्तः ।

को न प्रत्येतव्यः ? – ब्रूते यश्च अनृतं शश्वत् ॥४६॥

अर्थ–११५–प्रश्न– वृद्धि किसकी होती है ? उत्तर– जो विनम्र है ।

११६–प्रश्न– अधःपतित कौन होता है ? उत्तर– दंभी व्यक्ति ।

११७–प्रश्न– कौन विश्वासपात्र नहीं है ? उत्तर– जो सदैव असत्य कहता है ।

कुत्र अनृतेऽपि अपापम्?

यच्चोक्तं धर्मरक्षार्थम् ।

को धर्मः? अभिमतो यः शिष्टानां निजकुलीनानाम् ॥४७॥

अर्थ–११८–प्रश्न– कब असत्य भी पातक नहीं रहता ?

उत्तर– जब धर्म रक्षणार्थ कहा गया हो ।

११९–प्रश्न– धर्म क्या है ?

उत्तर– कुल के महान एवं पवित्र पूर्वजों द्वारा स्वीकृत शिष्टाचार और नैतिक मूल्य ।

साधुबलं किम् ? – दैवम् ।

कः साधुः ? – सर्वदा तुष्टः ।

दैवं किम् ? – यत् सुकृतम् ।

कः सुकृती ? – श्लाघ्यते च य सद्भिः ॥४८॥

अर्थ–१२०–प्रश्न– सज्ञनों का बल क्या है ? उत्तर– प्रारब्ध ।

१२१–प्रश्न– सज्ञन कौन है ? उत्तर– जो सदैव संतुष्ट है ।

१२२–प्रश्न– प्रारब्ध क्या है ? उत्तर– सत्कर्म ।

१२३–प्रश्न– सुकृती (सत्कर्म करनेवाला) कौन है ?

उत्तर– गुणीजन जिसकी प्रशंसा करते हैं वह ।

गृहमेधिनश्च मित्रं किम् ? – भार्या ।

को गृही च? यो यजते ।

को यज्ञः? यः श्रुत्या विहितः श्रेयस्करो नृणाम् ॥४९॥

अर्थ–१२४–प्रश्न– गृहस्थ का मित्र कौन है ? उत्तर– पत्नी ।

१२५–प्रश्न– गृहस्थ कौन है ? उत्तर– जो यज्ञ करता है ।

१२६–प्रश्न– यज्ञ क्या है ?

उत्तर– जो वेदों में कहा गया है और जो मानवता के लिए हितकारक है ।

कस्य क्रिया हि सफला?– यः पुनः आचारवान् शिष्टः ।

कः शिष्टः? – यो वेदप्रमाणवान् ।

को हतः? क्रियाभ्रष्टः ॥५०॥

अर्थ–१२७–प्रश्न– किसका कर्म फलप्रद है ?

उत्तर– जिसका आचरण शुद्ध है और जो शिष्ट है ।

१२८–प्रश्न– शिष्ट (अच्छे आचरण या स्वभाव वाला) कौन है ?

उत्तर– जो वेद को प्रमाण (वह कथन या तत्व जिसे किसी बात को सिद्ध करने के लिए प्रस्तुत किया जाए, साक्ष्य) मानता है ।

१२९–प्रश्न– कौन मृत्यु को प्राप्त होता है ?

उत्तर– स्वधर्म को भूला हुआ ।

को धन्यः? – संन्यासी ।

को मान्यः? – पण्डितः साधुः ।

कः सेव्यः? – यो दाता ।

को दाता? यो अर्थतृप्तिम् आतनुते ॥५१॥

अर्थ–१३०–प्रश्न– धन्य (जीवन के उच्चतम ध्येय को प्राप्त करनेवाला) कौन है ?

उत्तर– संन्यासी (संसार में जकड़ी हुई बेड़ी को जिसने तोड़ दिया है) ।

१३१–प्रश्न–सम्माननीय (आदरपात्र) कौन है ? उत्तर–जो ज्ञानी एवं सरल है ।

१३२–प्रश्न– पूजनीय कौन है ? उत्तर – जो दाता है ।

१३३–प्रश्न– दाता कौन है ? उत्तर – ज़रूरतमंद को संतुष्ट करनेवाला ।

कि भाग्य देहवताम् ? – आरोग्यम् ।

कः फली? – कृषिकृत् ।

कस्य न पापम्? जपतः ।

कः पूर्णः? – यः प्रजावान् स्यात् ॥५२॥

अर्थ–१३४–प्रश्न– देहधारी के लिए आशिष (भाग्य) क्या है ? उत्तर – आरोग्य ।

१३५–प्रश्न– फल का आनंद कौन लेता है ?

उत्तर – जो बोता है (प्रयत्नशील है) ।

१३६–प्रश्न–निष्पाप कौन है ? उत्तर–जो जप करता है (निरंतर मननशील) ।

१३७–प्रश्न– पूर्ण कौन है ? उत्तर – जिनकी संतान है ।

किं दुष्करं नराणाम् ?– यन्मनसो निग्रहः सततम् ।

को ब्रह्मचर्यवान् स्यात्?– यश्च अस्खलित ऊर्ध्वरेतस्कः ॥५३॥

अर्थ–१३८–प्रश्न–मनुष्यों के लिए कठिन क्या है ? उत्तर–मन का निरंतर नियंत्रण ।

१३९–प्रश्न– ब्रह्मचारी कौन है ?

उत्तर– जिसने अपनी शक्ति का उदात्तीकरण (संचय) किया है, नहीं कि व्यय । जिसने इंद्रियों पर नियंत्रण रखकर, वीर्य की रक्षा की और सांसारिक इच्छाओं से दूर रहकर मन को एकाग्र किया।

(*ब्रह्मचर्य का अर्थ– "ब्रह्म" (परमात्मा) और "चर्य" (आचरण करने योग्य) से बना है, जिसका अर्थ है परमात्मा में निमग्न रहना* ,स्व स्वरुप में लीनरहना)

का च परदेवता उक्ता? – चिच्छक्तिः ।

को जगत्भर्ता ? – सूर्यः ।

सर्वेषां को जीवनहेतुः ? – स पर्जन्यः ॥५४॥

अर्थ–१४०–प्रश्न– सर्वश्रेष्ठ देवी कौन है ? उत्तर– चेतनाशक्ति (माँ अम्बा) ।

१४१–प्रश्न– जगत का संरक्षक कौन है ? उत्तर– सूर्य ।

१४२–प्रश्न– सभी के जीवन का स्रोत क्या है ? उत्तर– वर्षा ।

कः शूरः? –यो भीतत्राता ।

त्राता च कः? – स गुरुः ।

को हि जगद्गुरुरुक्तः? – शंभुः ।

ज्ञानं कुतः ? – शिवादेव ॥५५॥

अर्थ–१४३–प्रश्न– शूर कौन है ? उत्तर– जो भयभीत का रक्षक है ।

१४४–प्रश्न– रक्षक कौन है ? उत्तर– गुरु ।

१४५–प्रश्न– जगद्गुरु कौन है ? उत्तर– भगवान शिव ।

१४६–प्रश्न– ज्ञान कहाँ से प्राप्त होता है ? उत्तर– भगवान शिव से ।

मुक्तिं लभेत कस्मात् ? – मुकुन्दभक्तेः ।

मुकुन्दः कः? यस्तारयेत् अविद्याम् ।

का च अविद्या? – यत् आत्मनो अस्फूर्तिः ॥५६॥

अर्थ–१४७–प्रश्न– मुक्ति किससे प्राप्त होती है ? उत्तर– मुकुंद (विष्णु) भक्ति से ।

१४८–प्रश्न– मुकुंद कौन है ? उत्तर– अविद्या से तारने वाला ।

१४९–प्रश्न– अविद्या क्या है ? उत्तर– स्वं को न जानना ।

कस्य न शोकः? – यः स्यात् अक्रोधः ।

किं सुखम् ? – तुष्टिः ।

को राजा? – रञ्जनकृत्

कश्च श्वा ? – नीचसेवको यः स्यात् ॥५७॥

अर्थ–१५०–प्रश्न– कौन शोकरहित है ? उत्तर– कभी क्रोधित न होने वाला ।

१५१–प्रश्न– सुख क्या है ? उत्तर– संतोष ।

१५२–प्रश्न– राजा कौन है ?

उत्तर –दूसरों को खुश करनेवाला (जो विषयों को खुश करता है, न कि विषय उन्हें) ।

१५३–प्रश्न– कुत्ता कौन है ? उत्तर– नीच व्यक्ति की सेवा करनेवाला ।

को मायी ? – परमेशः ।

कः इन्द्रजालायते? – प्रपञ्चोऽयं ।

कः स्वप्ननिभः ? – जाग्रत् व्यवहारः ।

सत्यमपि च किम् ? – ब्रह्म ॥५८॥

अर्थ–१५४–प्रश्न– माया का रचयिता कौन है ? उत्तर– सर्वोत्तम ईश्वर ।

१५५–प्रश्न– इन्द्रजाल (सर्वश्रेष्ठ दैवी जादू, मायाजाल या बाजीगरी, भ्रम या छल जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध करके धोखा देता) क्या है ?

उत्तर– यह सम्पूर्ण जगत ।

१५६–प्रश्न– स्वप्नवत् क्या है ?

उत्तर– जागृत अवस्था में जो कुछ भी हो रहा है ।

१५७–प्रश्न– सत्य क्या है ? उत्तर– ब्रह्म ।

किं मिथ्या? – यद्विद्यानाश्यं ।

तुच्छं तु? – शशविषाणादि ।

का च अनिर्वचनीया? माया ।

किं कल्पितम् ? – द्वैतम् ॥५९॥

अर्थ–१५८–प्रश्न– मिथ्या (भ्रम) क्या है ?

उत्तर– सही ज्ञान के प्रकाश से जो नाश होता है ।

१५९–प्रश्न– तुच्छ क्या है ?

उत्तर– खरगोश के सींग जैसी चीजें, जिनका अस्तित्व ही नहीं है ।

१६०–प्रश्न– अवर्णनीय क्या है ? उत्तर– माया ।

१६१–प्रश्न– कल्पनीय क्या है ?

उत्तर– द्वैतवाद (जीव और शिव का अलगाव) ।

किं पारमार्थिकं स्यात् ? – अद्वैतम् ।

च अज्ञता कुतः ? – अनादिः ।

वपुषश्च पोषकं किम् ? – प्रारब्धम् ।

च अन्नदायि किम् ? – च आयुः ॥६०॥

अर्थ–१६२–प्रश्न– सर्वोत्तम सत्य क्या है ? उत्तर– अद्वैत ।

१६३–प्रश्न– यह अज्ञानता कब से है? उत्तर– अनादि से ।

१६४–प्रश्न– शरीर का पोषक क्या है ?

उत्तर– प्रारब्ध (पूर्व कर्म जिनके फल मिलने शुरू हुए है) ।

१६५–प्रश्न– अन्न कौन देता है ? उत्तर– आयुष्य ।

को ब्राह्मणैः उपास्यः? गायत्रि अर्क अग्नि गोचरः शंभुः ।

गायत्र्यां आदित्ये च अग्नौ शम्भौ च किं नु? तत् तत्वम् ॥६१॥

अर्थ–१६६–प्रश्न– ब्राह्मण को किसकी पूजा करनी चाहिए ?

उत्तर– गायत्री, सूर्य और अग्नि में जो व्याप्त है ऐसे शिवजी की ।

१६७–प्रश्न– गायत्री, सूर्य, अग्नि और शिव में क्या है ? उत्तर – परम सत्य ।

प्रत्यक्षदेवता का? – माता ।

पूज्यो गुरुश्च कः? तातः ।

कः सर्वदेवतात्मा ? – विद्या कर्मान्वितो विप्रः ॥६२॥

अर्थ–१६८–प्रश्न– प्रत्यक्ष देवता कौन है ? उत्तर– माता ।

१६९–प्रश्न– पूजनीय एवं गुरु कौन है ? उत्तर– पिता ।

१७०–प्रश्न– सभी देवता कहाँ स्थित है ?

उत्तर–ज्ञानी और कर्मनिष्ठ ब्राह्मण में ।

कश्च कुलक्षयहेतुः? संतापः सज्ञनेषु यो अकारि।

केषां अमोघवचनम् ? ये च पुनः सत्य मौन शम शीलाः ॥६३॥

अर्थ–१७१–प्रश्न– वंश के पतन का कारण क्या है ?

उत्तर– सज्ञनों को संताप देनेवाले कर्म ।

१७२–प्रश्न– किसके शब्द विफल नहीं होते ?

उत्तर–जिसमें सत्य है, मौन (वाणी पर नियंत्रण) है और मन नियंत्रित है ।

किं जन्म? – विषयसंगः ।

किं उत्तरं जन्म? – पुत्रः स्यात् ।

को अपरिहार्यः ? – मृत्युः ।

कुत्र पदं विन्यसेच्च? – दृक्पूते ॥६४॥

अर्थ–१७३–प्रश्न– जन्म का कारण क्या है ? उत्तर–विषयों से आसक्ति ।

१७४–प्रश्न– आगामी जन्म क्या है ? उत्तर– पुत्र ।

१७५–प्रश्न– अनिवार्य क्या है ? उत्तर– मृत्यु ।

१७६–प्रश्न– व्यक्ति को कहाँ पैर रखना चाहिए ?

उत्तर–जहाँ अच्छाई मालूम हो ।

पात्रं किं अन्नदाने? – क्षुधितम् ।

को अर्थ्यो हि? – भगवद् अवतारः ।

कश्च भगवान् ? – महेशः शंकरनारायणात्मैकः ॥६५॥

अर्थ–१७७–प्रश्न– कौन अन्नदान के पात्र है ? उत्तर–जो भूखा है ।

१७८–प्रश्न– कौन पूजनीय है ? उत्तर– भगवान के अवतार ।

१७९–प्रश्न– भगवान कौन है ?

उत्तर– वह परमेश्वर जिसमें शिव और नारायण व्याप्त (एक) है।

फलमपि भगवद्भक्तेः किम्?– तल्लोक स्वरूप साक्षात्वम् ।

मोक्षश्च कः? हि अविद्या अस्तमयः ।

कः सर्ववेदभूः? अथ च ॐ ॥६६॥

अर्थ–१८०–प्रश्न– भगवद् भक्ति का फल क्या है ?

उत्तर– भगवद् तत्व की अनुभूति एवं स्व–स्वरूप की पहचान ।

१८१–प्रश्न– मोक्ष (मुक्ति) क्या है ?

उत्तर– अज्ञान से मुक्ति (अविद्या का अंत) ।

१८२–प्रश्न– वेदों का उद्भवस्थान क्या है ? उत्तर– ॐ ।

इत्येषा कण्ठस्था प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषां ।

ते मुक्ताभरणा इव विमलाश्चाभान्ति सत्समाजेषु ॥६७॥

प्रश्नोत्तर रत्न मालिका स्वरूप इस रत्नों की माला को जो कोई भी अपने गलेमें पहनता है (इसे मन में याद कर लेता है), वह महान–सज्जनों की सभा में रोशन होता है (प्रशस्ति पाता है) ।

॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यविरचिता प्रश्नोत्तररत्नमालिका समाप्ता ॥

श्रीमद् आद्य शङ्कराचार्य जी कृत की सम्पूर्ण कृतियाँ

भाष्य: इन पर टिप्पणियाँ:

1. ब्रह्म सूत्र
2. ईशावास्य उपनिषद्
3. केन उपनिषद
4. कठोपनिषद्
5. प्रश्न उपनिषद्
6. मुण्डक उपनिषद्
7. माण्डूक्य उपनिषद्
8. माण्डूक्य कारिका
9. ऐतरेय उपनिषद
10. तैत्तिरीय उपनिषद
11. छांदोग्य उपनिषद
12. बृहदारण्यक उपनिषद
13. श्री नृसिंह तापनीय उपनिषद

14. श्रीमद्भगवद्गीता

15. श्री विष्णुसहस्रनाम

16. सनत सुजातियम्

17. ललिता त्रि–सती

18. हस्तामलकीयम्

प्रक्रिया पुस्तकें:

19. विवेकचूड़ामणि

20. अपरोक्षानुभूति

21.उपदेश सहस्री

22. वाक्य वृत्ति

23. स्वात्म निरूपणम्

24. आत्म–बोध

25. सर्व वेदांत सारा संग्रह

26. प्रबोध सुधाकरम्

27. स्वात्म प्रकाशिका

28. अद्वैत अनुभूति

29. ब्रह्म–अनुचिंतनम्

30. प्रश्न–उत्तर रत्नमालिका

31. सदाचार–अनुसन्धानम्

32. योग तारावली

33. अनात्मा–श्री विघ्नमन्नन

34. स्वरूप अनुसन्धानम्

35. पंचीकरणम्
36. तत्त्व–बोध
37. प्रौदा–अनुभूति
38. ब्रह्म ज्ञानावली
39. लघु वाक्यवृत्ति
40. मोह मुद्गरम (भज गोविंदम)
41. प्रपंचसारम

भजन और ध्यान छंद:

42. श्री गणेश पंचरत्नम्
43. गणेश भुजंगम्
44. सुब्रह्मण्य भुजंगम्
45. शिव भुजंगम्
46. देवी भुजंगम्
47. भवानी भुजंगम्
48. श्री राम भुजंगम्
49. विष्णु भुजंगम्
50. शारदा भुजंगम्
51. शिवानंद लहरी
52. सौन्दर्य लहरी
53. आनंद लहरी
54. शिवपादादिकेशांतवर्णन स्तोत्रम्
55. शिव–केशादि–पादान्त–वर्णन स्तोत्रम्

56. श्री विष्णुपदादिकेशांतवर्णन स्तोत्रम्
57. उमा–महेश्वर स्तोत्रम्
58. त्रिपुरसुन्दरी वेदपाद स्तोत्रम्
59. त्रिपुरसुन्दरी मनसापूजा स्तोत्रम्
60. त्रिपुरसुंदरी अष्टकम्
61. देवी–सांति–उपचार–पूजा स्तोत्रम्
62. मंत्र–मातृका–पुष्पमाला स्तवम्
63. कनकधारा स्तोत्रम्
64. अन्नपूर्णा स्तोत्रम्
65. अर्ध–नारी–नटेश्वर स्तोत्रम्
66. भ्रमण–अम्बा–अष्टकम्
67. मीनाक्षी स्तोत्रम्
68. मीनाक्षी पंचरत्नम्
69. गौरी दशकम्
70. नवरत्न मालिका
71. कल्याण वृष्टि–स्तवम्
72. ललिता पंचरत्नम्
73. माया पंचकम्
74. सुवर्ण माला स्तुति
75. दस श्लोकी
76. वेद सार शिव स्तोत्रम्
77. शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्

78. शिव–अपराध–क्षमापना स्तोत्रम्
79. दक्षिणामूर्ति अष्टकम्
80. दक्षिणामूर्ति वर्णमाला स्तोत्रम्
81. मृत्युंजय मनसा पूजा स्तोत्रम्
82. शिव नामावली अष्टकम्
83. काल भैरव अष्टकम्
84. श्री विष्णु षटपदी स्तोत्रम्
85. शिव–पंचाक्षर–नक्षत्र–माला स्तोत्रम्
86. द्वादशा–लिंग स्तोत्रम्
87. काशी पंचकम्
88. हनुमत पंचरत्नम्
89. लक्ष्मी–नरसिंह–पंचरत्नम्
90. लक्ष्मी–नरसिम्हा–करुणारस स्तोत्रम्
91. पांडुरंग–अष्टकम्
92. अच्युता–अष्टकम्
93. श्री कृष्ण–अष्टकम्
94. हरि स्तुति
95. गोविंदा–अष्टकम्
96. भागवत–मानस–पूजा
97. प्रातः स्मरण स्तोत्रम्
98. जगन्नाथ–अष्टकम्
99. गुरुवाष्टकम्

100. नर्मदा–अष्टकम्

101. यमुना–अष्टकम्

102. गंगा–अष्टकम्

103. मणिकर्णिका–अष्टकम्

104. निर्गुण मनसा पूजा

105. एक श्लोकी

106. यति पंचकम्

107. जीवन–मुक्त–आनंद–लहरी

108. ध्यान–अष्टकम्

109. उपदेश (साधना) पंचकम

110. शत श्लोकी

111. मनीषा पंचकम्

112. अद्वैत पंचरत्नम्

113. निर्वाण शतकम्